Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

सावित्री बाई फुले का महिला शिक्षा और दलितों के उत्थान में योगदान

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

सावित्री बाई फुले का महिला शिक्षा और दलितों के उत्थान में योगदान

Meena Ambesh*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

सारांश - शोध पत्र ने सावित्री बाई फुले द्वारा महिलाओं की शिक्षा में योगदान और दलितों के उत्थान का अध्ययन किया है। दुनिया के किसी भी कोने में, जब मानव और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठानी होती है, तो दो बातें महत्वपूर्ण होती हैं - एक तो यह है कि बुरे प्रभावों का अनुभव करने की सामाजिक प्रणाली को समझना है और दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे निडर होकर समझें प्रतिरोध करने की क्षमता। उसके बाद, विषय का भी अर्थ है, जिसके खिलाफ आवाज उठाई गई है। पूरी दुनिया इस तरह के उदाहरणों से परिपूर्ण है, चाहे वह यूरोप और अमेरिका में पूंजीवाद के विकास के साथ-साथ परिवार के ढांचे में बदलाव का दौर रहा हो या फिर एशिया में समानता के अधिकार के लिए महिलाओं के आंदोलन हुए हों। आम तौर पर, प्रत्येक समाज ने प्राकृतिक नारीवाद के स्त्री सिद्धांतों के तहत परिवार की परवरिश के बंधन में बांधकर अपने प्राकृतिक बुद्धिजीवियों के साथ अन्याय किया है। लेकिन वास्तव में जब प्राकृतिक नारीवाद जैसी कोई प्रवृत्ति नहीं है, तो उनकी सीमाएं क्या हैं और प्रतिबंध क्या हैं। यही वह भावना है जो सावित्री बाई फुले जैसी नायिका को समाज में एक मजबूत आवाज बनने के लिए मजबूर करती है। उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआती सुधारवादी आंदोलन केवल पुरुषों द्वारा संचालित किए गए थे। ऐसे में जो नाम अपवाद के रूप में सामने आता है, वह है वीरांगना सावित्री बाई फुले। उन्हें अपने समय की एकमात्र महिला कहा जा सकता है, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिला शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए, बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। विवाहित और निराश्रित महिलाएं। जीवन यापन के लिए आवास गृह स्थापित करने जैसे सामाजिक कार्य करते हुए वे क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़े। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज़ माना जाता है।

शब्द कुंजीः - भारतीय समाज में महिलाओं का महत्व, सावित्री बाई फुले की भूमिका, सावित्री बाई फुले एक शिक्षक और समाज सुधारक, सावित्रीबाई फुले का दलित उत्थान में योगदान, सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान और सावित्री बाई फुले के सामाजिक कार्य।

----------x----------

परिचय:

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी था। उनका जन्म एक ऐसे घर में हुआ था जहाँ उनके पिता किताब लेने के लिए लड़की के खिलाफ थे। सावित्री के जीवन में हुई घटना से इस बात की पुष्टि स्पष्ट होती है, जब बचपन में एक बार वह जल्दबाज़ी में एक अंग्रेजी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, अचानक उसके पिता ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया और वह बहुत ही अत्याचार कर रही थी, यही नहीं, छीन लिया पुस्तक और इसे खिड़की से बाहर फेंक दिया, और इसे दोबारा न पढ़ने के सख्त निर्देश भी दिए। उस समय सावित्री को पढ़ना भी नहीं आता था और न ही उसकी उम्र थी कि वह पढ़ाई के महत्व जैसे विषय की गहराई को समझ सके। लेकिन कहीं न कहीं इस घटना ने उसके मन में विद्रोह के बीज बो दिए थे, हालाँकि वह उस समय चुप रही। सावित्रीबाई का विवाह मात्र नौ वर्ष की आयु में 1840 में 13 वर्षीय ज्योतिराव फुले से हुआ था। संभवतः, यह बैठक सावित्री बाई के इस धरती पर जन्म लेने के उद्देश्य को पूरा करने का पहला चरण था। बचपन में, एक ही मौन सावित्री जो अपने पिता को पुस्तक रखने के लिए भी नहीं रोक सकती थी, महात्मा ज्योतिबा फुले की पत्नी बनकर समाज की पहली आवाज बन गई। ज्योतिबा फुले शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और शिक्षा को महिलाओं के आत्मनिर्भरता और सामाजिक अन्याय से मुक्ति

www.ignited.in

के लिए एकमात्र साधन मानते थे। यही कारण था कि सबसे पहले उन्होंने अपनी अनपढ़ पत्नी सावित्री को न केवल शिक्षित किया बल्कि उन्हें अन्य महिलाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी भी दी। यह निस्संदेह सावित्री बाई के लिए एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। यह एक ऐसा समाज था जहाँ अधिकांश समाज महिलाओं को शिक्षित करने का विरोध करता था। उस समय केवल एक ही प्रथा थी कि लड़कियों की शादी करनी होती है, उन्हें ससुराल से छुट्टी देनी होती है और लड़कियों के लिए घरेलू काम करना जरूरी होता है, उन्हें शिक्षित होने से कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए। ऐसे संकीर्ण विचारों की जड़ों तक पहुँचकर, समाज की मानसिकता में गहरी बैठकर, केवल सावित्री बाई फुले जैसी वीरता ही उन्हें खोखला करने जैसा कठिन काम कर सकती थी। सावित्रीबाई फुले की बीमारी के अंतिम दिनों में प्लेग फैल गया। वह मरीजों को बचाने की पूरी कोशिश करती थी, जबकि उसे पता था कि प्लेग एक छूत की बीमारी है। अंत में, रोगियों को बचाने के प्रयास में, वह खुद ही बीमारी से ग्रस्त हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

उद्देश्य:

1. सावित्री बाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान का अध्ययन किया गया है।
2. सावित्री बाई फुले ने दलितों के उत्थान में योगदान देने के लिए चर्चा की।
3. समाज पर सावित्री बाई फुले के प्रभावों का वर्णन किया गया है।

परिकल्पना:

1. सावित्री बाई फुले ने महिला शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. सावित्री बाई फुले के कार्यों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। माध्यमिक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

भारतीय समाज में महिलाओं का महत्व:

भारत में वैदिक काल में, महिलाओं को देवी के रूप में देखा जाता था। वह पढ़ाई में पारंगत थी। काल और कपल की विसंगतियों ने समाज को मर्दाना प्रवृत्ति की ओर मोड़ दिया और समाज में महिलाओं के प्रति स्वाभाविक नारीवाद जैसी नकारात्मक ऊर्जा सोचने लगी। उस समय शायद सावित्री बाई फुले जैसी कोई उत्साही नहीं थीं या ऐसी व्यक्तित्वों को जन्म देने की सामाजिक पृष्ठभूमि नियति को तैयार करने में लगी हुई थी। इसका परिणाम समाज के सबसे खराब रूप के रूप में सामने आया, जो अभी भी हीनता के किसी न किसी रूप में दिखाई दे रहा है। लोग आज निश्चित रूप से कहते हैं कि वर्ण व्यवस्था समाज को जातिवाद के दलदल में फँसाती है। लेकिन वे केवल अपने हितों को साबित करने के लिए ऐसा कहते हैं। समाज में, प्रणाली केवल अमीर और गरीब के बारे में है, जबकि यह पुरुषों और महिलाओं के असमान अधिकारों के बारे में भी प्रकट होती है। चार वर्णों के धनी लोगों ने जीवन को समृद्धि की सीमा तक अपने तरीके से जिया है और यह चल रहा है। चार वर्णों के गरीबों का हमेशा शोषण होता रहा है और इस तरह के उभरते समाजों में महिलाओं के लिए वर्ण, जाति, धर्म और धर्म कभी नहीं रहा है।

पिछली दो शताब्दियों के महिला आंदोलन के इतिहास को देखते हुए, सावित्री बाई फुले का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने भारतीय समाज में विरोध की आवाज ऐसे समय में उठाई थी जब भारतीय महिलाओं को समाज में मूल लोकतांत्रिक अधिकार भी नहीं मिले थे। यह वह समय था जब महिलाएं पितृसत्तात्मक उत्पीड़न और शोषण, उनकी आर्थिक निर्भरता और पुरुषों के अधीनस्थ सामाजिक जीवन का नेतृत्व कर रही थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआती सुधारवादी आंदोलन केवल पुरुषों द्वारा संचालित किए गए थे। ऐसे में जो नाम अपवाद के रूप में सामने आता है, वह है वीरांगना सावित्री बाई फुले। उन्हें अपने समय की एकमात्र महिला कहा जा सकता है, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिला शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए, बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। विवाहित और निराश्रित महिलाएं। जीवन यापन के लिए आवास गृह स्थापित करने जैसे सामाजिक कार्य करते हुए वे क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़े। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज़ माना जाता है।

सावित्री बाई फुले की भूमिकाः

सावित्रीबाई पूरे देश की महान महिला बन गईं, उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णता से ऊपर उठकर देश की सभी दलित, शोषित और उत्पीड़ित महिलाओं के जीवन के लिए काम किया। महिलाओं की चेतना में सावित्रीबाई फुले के सफल प्रयासों ने आज विशेष रूप से शिक्षित मध्यवर्गीय महिलाओं को उन व्यवसायों और पदों में प्रतिष्ठित किया है, जिनके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। जाति और धर्म की सीमित मानसिकता से परे, सर्वे भवन्तु सुखिनः की सीमा में महान भारत की बेटी को बांधना ... ... उसकी प्रशंसा महानता के साथ न्याय नहीं करता।

आज हम जिस तरह के समाज को देख रहे हैं, उसमें कई महान महिलाओं और पुरुषों ने योगदान दिया है। पहली ऐसी महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। उन्होंने अपना जीवन वंचित वर्गों, विशेषकर महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया।

सावित्रीबाई फुले का मानना था कि महिलाओं और शोषितों को शोषण, मुक्ति और विकास के लिए आत्मनिर्भर होने की जरूरत है, जिसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फुले दंपति ने जीवन भर महिलाओं, शोषितों, पीड़ितों, दलितों, विधवाओं और बच्चों के उत्थान के लिए बिना किसी भेदभाव के काम करते रहे।

सावित्री बाई ने अपने सामाजिक और महिला सुधार आंदोलनों की शुरुआत की, शायद उस समय की निम्न-सामाजिक सोच की अस्पृश्यता के कारण, लेकिन जैसे-जैसे उनके सुधार प्रगति के पथ पर सफल हो रहे थे, वे अपने काम में बढ़ रहे थे। उन्होंने उस समय सभी जातियों की विधवाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ भी जोरदार आवाज उठाई। 28 जनवरी 1853 को, उन्होंने ऐसे पीड़ितों के लिए एक बच्चे की हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया। सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने अपने घर से सामाजिक सुधार के लिए अपने सभी परिवर्तनकारी कार्य शुरू किए और समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत किए। उन्होंने खुद एक विधवा ब्राह्मण महिला, काशीबाई के एक बच्चे को गोद लिया, और अपने दत्तक पुत्र यशवंत राव को डॉक्टर बनाया और अंतरजातीय विवाह करके जाति और वर्ग से परे एक शिक्षित और सुशिक्षित समाज की स्थापना करने के अपने महान विचार प्राप्त किए। रखा।

सावित्री बाई फुले एक शिक्षक और समाज सुधारक हैं

सावित्री बाई फुले एक शिक्षक और समाज सुधारक होने के साथ-साथ एक कवि और प्रकृति प्रेमी भी थीं। उनका लेखन अद्वितीय था। उनकी पहली पुस्तक 'काव्य फुले' 1854 में प्रकाशित हुई थी। उनकी अधिकांश कविताएँ महिलाओं की समस्याओं, शिक्षा, जाति और अधीनता के बारे में थीं। उन्होंने प्रकृति पर कुछ कविताएँ भी लिखीं। उनका बावन काशी भी सुबोध रत्नाकर नामक एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है। यह 1891 में प्रकाशित उनके पति महात्मा फुले की जीवनी पर आधारित है। इनके अलावा, मेदिता सावित्री बाई फुले ने भारतीय इतिहास पर ज्योतिबा फुले के व्याख्यान से संबंधित चार पुस्तकों का संपादन किया। उन्होंने 1892 में अपने स्वयं के भाषणों को भी संपादित किया। उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में सभी को बहुत अच्छा संदेश दिया कि "कड़ी मेहनत करो, अच्छे से पढ़ाई करो और अच्छा काम करो।"

28 नवंबर 1890 को नियति ने उनके पति महात्मा फुले को उनसे छीन लिया। अंदर से टूट गया, लेकिन बाहर से, अटल वीरांगना सावित्री ने अपने हाथों से अपने सबसे महान गुरु और संरक्षक महात्मा फुले का अंतिम संस्कार किया, एक बार फिर समाज के सामने एक उदाहरण बन गया, अंतिम संस्कार की रूढ़िवादी परंपराओं को खारिज कर दिया। वह भारतीय इतिहास में पहली महिला बनीं जिन्होंने अंतिम संस्कार जैसे अनुष्ठानों में भी महिलाओं के लिए समान अधिकारों की वकालत की। महात्मा फुले के बाद, सावित्री बाई फुले ने उन पर सभी अधूरे सामाजिक सुधार कार्यों की जिम्मेदारी ली। 1896 के गंभीर अकाल के दौरान, उन्होंने पीड़ितों का समर्थन करने के लिए अथक प्रयास किया। एक साल बाद, 1897 में, पूरे पूना को प्लेग ने घेर लिया, जब सावित्री बाई फुले ने पूरी तरह से रोगियों की सेवा के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उसने दिन भर मरीजों की सेवा की, रोजाना लगभग दो हजार बच्चों को खिलाया और सभी बच्चों को अपने बच्चों के रूप में परोसा। प्लेग से पीड़ित बच्चे अपनी मातृत्व की आड़ में ठीक हो रहे थे, लेकिन सावित्री बाई खुद प्लेग की चपेट में आ गईं।

10 मार्च 1897 को, इस भारतीय नायिका ने अपने जीवन के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया और चिरसमाधि में तल्लीन हो गई, अपने जीवन की अंतिम सांस तक समाज और महिलाओं की सेवा की।

सावित्रीबाई फुले ने दलितों के उत्थान में योगदान दियाः

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं और शूद्रों को अधिकारों से वंचित रखा गया है। साजिश के तहत कई जगहों पर वर्णित धार्मिक ग्रंथों में उनके अधिकारों पर प्रतिबंध लगाया गया है। तुलसी रामचरित मानस में, "ढोल गवार शुद्र पशू नारी,

www.ignited.in

ये सब है तेरी रचना", जो शूद्रों और महिलाओं को परेशान करने के लिए प्रसिद्ध है।

सावित्रीबाई फुले के समय में, इन धार्मिक और रूढ़िवादी परंपराओं की मान्यताओं के कारण, महिलाओं और दलितों की स्थिति अमानवीय थी, जो आज कमोबेश मौजूद है। समकालीन समाज में, महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध, विधवा हजामत बनाना, सती प्रथा, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, विधवा महिलाओं का शारीरिक और मानसिक शोषण और शूद्रों की शिक्षा पर प्रतिबंध, शूद्रों को सार्वजनिक स्थानों और कई तरह से रूढ़िवादी परंपराओं का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। , जैसे यातना, अस्तित्व में।

सावित्रीबाई फुले ने रूढ़िवादी सामाजिक परंपराओं को तोड़ने और महिलाओं और अतिशूद्रों, शूद्रों के जीवन स्तर में सुधार के लिए पहल की। उन्होंने अपने पति की मदद से 1852 में महिला मंडल का गठन किया। महिलाओं और शूद्रों को शिक्षित करने के लिए, 1 जनवरी 1848 को, पुणे के बुधवर पेठ में पहला गल्स स्कूल खोला गया, जिसमें उन्होंने एक शिक्षक के रूप में पढ़ाना शुरू किया।

उन्होंने यह सब उस समय किया जब महिलाओं और शूद्रों को पढ़ाने पर प्रतिबंध था। उसके कार्यों का समाज ने कड़ा विरोध किया, लेकिन वह सामाजिक कार्यों में लगी रही। उसे अश्लील गालियाँ दी गईं, जिससे धर्म डूब गया। उस पर गोबर, मिट्टी और पत्थर फेंके गए लेकिन उसने सामाजिक कार्य करना बंद नहीं किया। वह स्कूल जाते समय अपने साथ एक साड़ी भी ले जाती थी ताकि स्कूल जाने से गोबर से ढकी साड़ी को बदला जा सके। बड़े पैमाने पर सामाजिक कार्य करने के लिए, 1849 में, पूना, सतारा, अहमद नगर ने मिलकर 18 स्कूलों की स्थापना की। वह कविता में शूद्रों और महिलाओं को संबोधित करते हुए लिखती हैं -

शुद्र भाई-बहनों को जगाएं

नींद से जागो

गुलामी को दूर फेंको

मजबूती से खड़े रहें

खड़े हो जाओ

षड्यंत्रकारी प्रतिबंधों के भ्रूण

टूट जाओ, आत्मज्ञान पाने का मार्ग प्रशस्त करो

शिक्षा के लिए दृढ़ संकल्प लें

उठो खड़े हो जाओ

हार बैरियर के सामने, सीना तान।

रूढ़िवादी परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के खिलाफ, सामाजिक सुधार के विचारों को पकड़ना और ले जाना आसान नहीं है। हमेशा कठिनाइयाँ और जोखिम बने रहते हैं। हालांकि, सफलता की सराहना भी की जाती है। फुले दंपति को सामाजिक कार्यों के कारण भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। समाज के दबाव में ससुर को उनके घर से निकाल दिया गया। सामाजिक कार्यों के कारण, उनके विरोधियों ने उनके जीवन को मारने की कोशिश की, लेकिन वह अपने कार्यों के लिए अड़े रहे।

सावित्रीबाई फुले का महिलाओं की शिक्षा में योगदानः

सावित्री बाई फुले ने 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की केवल नौ लड़कियों के साथ पूना में पहला गल्स स्कूल स्थापित किया, जहाँ वह खुद पहली शिक्षिका बनीं। इसके अलावा उन्होंने महिला शिक्षकों की एक टीम भी बनाई, कहा जाता है कि फातिमा शेख नाम की एक महिला ने इस टीम में उनका पूरा साथ दिया। सदाशिव गोवंदे ने इस पहले नारी शाला के लिए पुस्तकों का प्रबंधन किया। सावित्री बाई खुद इतनी अच्छी शिक्षिका थीं कि कुछ ही दिनों में उनका स्कूल पूना में एक उत्कृष्ट स्कूल बन गया। इसलिए, उसके बढ़ते महत्व के कारण, कुछ लोगों ने फिर से अत्याचार करना शुरू कर दिया, जिसके कारण सावित्री को कुछ समय के लिए अपना स्कूल बंद करना पड़ा। लेकिन उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, अपार शक्ति और अदम्य उत्साह ने जल्द ही एक नई जगह एक नए स्कूल की शुरुआत की।

निश्चित रूप से, सावित्री बाई ने उस दौर में महिला शिक्षा द्वारा उठाए गए विद्रोही कदम उठाए, उन्होंने इसे सहन करने के लिए अत्यधिक प्रतिरोध सहन किया। जब वह पढ़ाने के लिए स्कूल के लिए निकली, तो उसने अपने साथ फेंके गए गालियों और कचरे को निपटा दिया। लेकिन जब से वह अपने निस्वार्थ और बिना सोचे समझे सामाजिक महिला जागृति के पवित्र कार्य में लगी हुई थी, इस तरह के कृत्यों ने उसे अपने कर्तव्य पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति नहीं दी। वह अपने साथ एक और साड़ी ले जाती थी और स्कूल पहुंचने के बाद उसने अपने शिक्षण धर्म का निर्वहन करने के लिए एक साफ साड़ी पहनी थी। यहाँ यह उनके व्यक्तित्व का एक बिंदु है कि उन्होंने इस तरह की बाधाओं को सहन नहीं किया, लेकिन एक और साड़ी लेने के विकल्प के माध्यम से, उन्होंने सफलतापूर्वक यह दिखाने की कोशिश की कि ऐसी फलदायी सामाजिक बाधाओं के लिए सावित्री जैसी सकारात्मक ऊर्जा का खर्च। यह अधिक उचित होगा कि सभी विपक्षों को बर्बाद करने के लिए नष्ट न किया जाए, और अपना

सारा ध्यान महिला शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति की ओर केंद्रित किया जाए। निस्संदेह वह विजयी हुईं और अपने पति महात्मा फुले के साथ मिलकर, लड़कियों के लिए स्थापित कुल अठारह स्कूल इस जीत के जीवंत हस्ताक्षर बन गए।

सावित्री बाई ने तत्कालीन महिलाओं से संबंधित हर पहलू का गहराई से अनुभव किया और अपने समाधान स्थापित किए, जो न केवल शिक्षा तक सीमित थे, बल्कि कई सामाजिक विसंगतियों से भी संबंधित थे।

सावित्री बाई फुले का सामाजिक कार्यः

महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध के अलावा, विधवा महिलाओं को तत्काल समाज में कई तरह से प्रताड़ित किया गया। विधवाएँ मुंडन करने के लिए बाध्य थीं। उन्हें परमानंद और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने से मना किया गया था। घर के सदस्यों द्वारा उनका शारीरिक शोषण किया गया। गर्भवती होने पर, उसे भ्रूण हत्या के कारण या तो आत्महत्या करनी पड़ी या उसे मार दिया गया। उन्हें पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी, वर्तमान समाज में कुछ जगहों पर ऐसी समस्याएं अभी भी मौजूद हैं। विधवाओं की हजामत बंद करने के लिए, उन्होंने नाइयों से सहयोग करने की अपील की, इस प्रकार नाइयों ने विधवाओं का हजामत करना बंद कर दिया।

समाज में महिलाओं की समस्याओं से दुखी होकर, सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं और नवजात बच्चों की सुरक्षा के उद्देश्य से 28 जनवरी 1853 को शेल्टर होम मैटरनिटी होम खोला और उसका नाम चाइल्ड-मर्डर बैन होम रखा और बाद में एक अनाथालय की स्थापना की। प्रसूति गृह में, उसने 66 महिलाओं को भर्ती कराया था।

गर्भवती होने पर आत्महत्या करने जा रही विधवा महिला ने अपने मायके में एक ब्राह्मण महिला काशीबाई 'की डिलीवरी करवाई और उसके बेटे को गोद ले लिया। जिसका नाम यशवंतराव रखा गया, वह शिक्षित था और एक डॉक्टर बना था। उसकी शादी भी अंतरजातीय थी, जिसे सामाजिक परिवर्तन के एक विचार के रूप में देखा जा सकता है।

सावित्रीबाई फुले न केवल एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षिका थीं, बल्कि वे एक बहुत अच्छी कवियित्री भी थीं। उन्होंने दो काव्य संग्रह, काव्य फुले और बावनकशी सुबोध रत्नाकर लिखे हैं, जिसमें सहज सामाजिक रूप से परिवर्तनशील और वंचित वर्गों और महिलाओं को जागृत करने की बात करते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से रूढ़िवादी सामाजिक परंपराओं का विरोध करते हुए लिखा है।

"शूद्रों एवं अतिशूद्रों की

दरिद्रता के लिए ज़िम्मेदार है

अज्ञानता, रीती-रिवाज़, रूढ़ीवाद

परंपराओं की बेड़ियों में बंधे-बढ़े पिछड़ गए सबसे, परिणाम

गरीबी के तेज़ाब से झुलस गए"

फुले दंपति ने 1873 में सामाजिक कार्यों के सुचारू संचालन के लिए 'सत्यशोधक समाज' संस्था की स्थापना की जिसके माध्यम से उन्होंने अंतरजातीय विवाह, विधवा संरक्षण, बाल सुरक्षा अंधविश्वास और मिथकों को तोड़ने और जन जागृति लाने का काम शुरू किया। फुले की मृत्यु के बाद भी ज्योतिबा ने काम करना जारी रखा।

आज भी, महिलाओं को समाज में कई कार्यों में भाग लेने की मनाही है, अगर कोई महिला जोखिम में काम करती है, तो उसे मीडिया द्वारा प्रमुखता से चित्रित किया जाता है। जो होना भी चाहिए। 128 साल पहले, जब सावित्रीबाई फुले के पति ज्योतिबा फुले की मृत्यु वर्ष 1890 में हुई थी। तब उनकी चिता सावित्रीबाई फुले ने खुद जलाई थी। जो उनकी आधुनिक सोच को दर्शाता है।

निष्कर्षः

कई सामाजिक कार्य उनके द्वारा किए गए हैं लेकिन आज भी बहुत से लोग उनके बारे में नहीं जानते हैं, इसका कारण उन्हें पढ़ाए जा रहे पाठ्य पुस्तकों में शामिल नहीं करना है। जैसा कि हम समाज सुधारकों ने अपनी पाठ्य पुस्तकों में समाज सुधारकों के बारे में कई पुरुषों को पढ़ा, लेकिन उच्च सामाजिक सुधार कार्य करने के बाद भी, सावित्रीबाई फुले का नाम नहीं लिया गया। इसके दो कारण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, एक महिला और एक पिछड़ी जाति से। वंचितों और महिलाओं की नायिकाओं को बदलते परिवेश में लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता है। सावित्री बाई फुले को एकमात्र ऐसी महिला कहा जा सकता है, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिलाओं की शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए, बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा विवाह के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। और निराश्रित महिलाओं का जीवन। सामाजिक कार्य करते हुए जैसे उनके लिए एक आवास गृह की स्थापना की, वे

www.ignited.in

क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़े। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज़ माना जाता है।

संदर्भ सूची:-

1. खुराना, के.एल. - मॉडेम इंडियन, 2002 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा - 3
2. मिशेल, एस.एम. (संपादक) - आधुनिक भारत में दलित, १ ९९९ - विस्तार प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कोटनी, एच. (एडिटेड द्वारा) -कास्ट सिस्टम, अनटच चबिलिटी एंड द डिप्रेस्ड, 1997 प्रिंटेड ऑन राज करनाल इलेक्ट्रिक प्रेस, बी -35 / 9 G.T. करनाल रोड, दिल्ली 110033
4. घड़ियाल रेहाना (इसके द्वारा संपादित) - भारतीय समाज में महिलाएं एक पाठक ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली
5. जोशी, तारकीता लक्ष्मणश्रेष्ठ, 1997 पब्लिशिन डिवीजन, पटियाला हाउस, नई दिल्ली - 110001
6. पवार, एन.जी. - महात्मा ज्योति राव फूले - भारतीय सामाजिक क्रांति के जनक 1999, पुस्तक एन्क्लेव जियान भवन, ओपी। N.E.I. शांति नगर, जयपुर 302006
7. कीर, धनंजय - महात्मा ज्योति राव फुले - भारत क्रांति के जनक, 1997, लोकप्रिय प्रकाशन प्रा. लिमिटेड 35-सी पंडित मदन मोहन मोलविया मार्ग, तारदिओ, मुंबई - 400034
8. पाटिल, प्रो. P.G. महात्मा ज्योति राव फूले, खंड II, शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार, बंबई के 400032 के कोलियेटेड वक्रस
9. भारत, 1996 में घेवर, जीएस जाति और जाति, लोकप्रिय प्रकाशन बॉम्बे
10. उपदेय, एच.सी. भारत में महिलाओं की स्थिति खंड II 1991, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली

पत्रिकाओं

1. भारतीय आर्थिक और सामाजिक इतिहास की समीक्षा जनवरी - मार्च - 2001. 37 नं। 1, ऋषि प्रकाशन नई दिल्ली
2. भारतीय समाजशास्त्र में योगदान मई - अगस्त - 2001 2 ऋषि प्रकाशन नई दिल्ली
3. ICSSR जर्नल ऑफ एब्सट्रैक्ट एंड रिव्यू सोशलॉजी एंड सोशल एंथ्रोपोलॉजी टवस.29 दव। 1 जनवरी-जून 2000 ICSSR नई दिल्ली - 110067

पत्र - पत्रिकाएं:-

1. भारतीय स्पेक्ट्रम
2. कूर्म क्षत्रिय जागरण - मासिक मुँह की चादर (क) नवंबर 1997 वर्ष 38 अंक 3, (ख) अप्रैल 1998, वर्ष 39, अंक 1 संपादक मदन मोहन पटेल - कूर्म क्षत्रिय जागरण - पटेल निवास 4 - नवैया, गणेश गंज लखनऊ (यूपी)
3. सुबोध पत्रिका
4. दीनबंधु
5. दलित टुडे - संपादक वेद कुमार प्रकाशन - वेद कुमार, 18/455 इंदिरा नगर, लखनऊ (उ.प्र।)
6. मासिक पत्रिका - महाराष्ट्र मानस - महात्मा ज्योतिराव फुले स्मृति शताब्दी विशेषांक - 16 फरवरी 1991। - अरुण पाटनकर संपादकीय पता - सूचना और जनसंपर्क, सामान्य कार्यालय, नया प्रशासन भवन, 17 वीं मंजिल, मुंबई
7. मासिक पत्रिकाएँ: - हम दलित - संपादक - प्रेम कपाड़िया, सोशल एक्शन ट्रस्ट - 10 - इंस्टीट्यूशनलरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली

Corresponding Author

Meena Ambesh*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan